International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 17-02-2026, Accepted: 19-03-2026, Published: 03-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 1-3

पत्रकारिता और साहित्य का अंतर्संबंध: इतिहास और वर्तमान

अवनीश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.2.8020

सारांश
पत्रकारिता को लेकर हमारे समाज में एक अलग किस्म की धारणा रही है। यद्यपि समय परिवर्तन के साथ–साथ इस धारणा में भी परिवर्तन हुआ है परन्तु विशिष्टता की जो भावना पहले थी वह आज भी बनी हुई है। अंतर केवल इतना है कि पहले पत्रकारिता उसके चुनौतीपूर्ण दायित्वों के कारण विशिष्ट व्यवसाय थी तो आज पत्रकारिता व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन–यापन और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसके हस्तक्षेप के कारण विशिष्टि है। आरंभ में पत्रकारिता की चुनौती कितनी बड़ी थी, इसका अनुमान अकबर इलाहाबादी के इस शेर से लगाया जा सकता है

खींचों न कमान, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

यह शेर हिन्दी के आदि समाचार पत्रों में प्रमुख 'मतवाला' के मुखपृष्ठ पर नियमित प्रकाशित होता था। स्वतंत्रता आंदोलन के उस युग में अंग्रेजी व हिन्दी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की संख्या में बहुत सीमित थी। देश में पत्रकारिता अपने शैशवकाल में थी। एक ओर व्यवसाय की नवीनता, समाचार पत्रों के मुद्रण और समाचार संकलन की मुश्किलें थीं तो दूसरी ओर औपनिवेशक शासन व्यवस्था, जिसके लिए समाचार पत्र जैसे अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम को स्वतंत्रता प्रदान करना एक किस्म से आत्मघात था। उस युग में पत्रकारिता करना या अखबार निकालना बहुत बड़ी चुनौती थी। पत्रकारिता व्यवसाय न होकर स्वतंत्रता आंदोलन के समान ही एक श्मिशनश (अभियान) थी। लिहाजा पत्रकारिता में ऐसे लोग ही आते थे जिनमें कुछ कर गुजरने की जिजीविषा होती थी और जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्थिक संकट, सामाजिक उपेक्षा और शासकीय उत्पीड़न झेलने का जीवट रखते थे। इस कारण उस युग में पत्रकार और पत्रकारिता के प्रति विशिष्टता की धारणा थी।

यह तब की बात है जब यूरोप के पुनर्जागरण के बाद ग्रेट ब्रिटेन सहित कई यूरोपीय देशों में लोकतंत्र की स्थापना तो हो चुकी थी लेकिन पूर्ववर्ती सामंतों और चर्च की भूमिका भी उनमें बनी हुई थी तब ब्रिटिश राजनैतिक टीकाकार बर्क ने लाईस (सामंत), टेंपोरेल (पादरी) और कॉमन्स (संसद या निर्वाचित जनप्रतिनिधि) को लोकतंत्र के तीन स्तंभ बताते हुए प्रेस को उसे गतिमान रखने वाला चौथा स्तंभ कहा था। तब से आज तक लोकतंत्र और प्रेस दोनों के स्वरूप में काफी बदलाव आ चुका है परन्तु प्रेस की लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मानने की धारणा अब भी बनी हुई है। भारतीय संदर्भ में बकें की उक्त धारणा की तुलना में गांधी जी की मान्यता अधिक प्रांसगिक है। गांधी जी पत्रकारिता को शासन से जोड़ने की अपेक्षा उसे एक सामान्य सामाजिक क्रिया–कलाप के रूप में देखते हैं। यथाः "समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, उसके विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

मूल शब्दः पत्रकारिता, समाचार–पत्र, औपनिवेशिक, लोकतंत्र, साहित्य, समाज, मीडिया, संचार, आधुनिक, इतिहास, विशिष्ट, ग्रामीण, विकास,

गांधी जी की यह धारणा आधुनिक पत्रकारिता जगत में कितने लोग स्वीकार करते हैं या इसका व्याहारिकता में कितना महत्त्व है यह अलग तथ्य है, परन्तु भारतीय पत्रकारिता की दो सौ वर्षों से लम्बी जीवन यात्रा में इसी घारणा को प्रमुखता मिली है।यही कारण है कि जब प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होने की बात उठती है तो इसके विरूद्ध कई विचार सामने आते है और इस धारणा का खंडन–मंडन होने लगता है। अब तक इस धारणा का दो स्तरों पर खंडन हुआ है। पहला– साहित्य जगत, मुख्यतः भारतीय साहित्यकार प्रेस को साहित्य का ही अंग मानते हैं कारण, हिन्दी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के अधिकतर चर्चित और विख्यात साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का संपादन–प्रकाशन कर उन्होंने महान साहित्य साधना की है। चूकिं यदि प्रेस को शासन का चौथा स्तंभ मान लिया जाता है तो वह शासन का ही अंग बन जाती है उसे भी वही सब करना–कहना पड़ता है जो शासन चाहता है या उसके हित में होता है। जबकि साहित्य के संदर्भ में यह बात लागू नहीं होती। वह न केवल शासन एवं समाज की विसंगतियों को प्रकट करता है वरन् उसे एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए वे पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मानने के बजाय समाजोन्मुख समसामयिक साहित्य मानते हैं। त्रकारिता के प्रति विशिष्टता की धारणा थी। विषय और व्यवसाय दोनों ही दृष्टियों से पत्रकारिता का जन्म पश्चिमी देशों में हुआ है। यद्यपि डा. अर्जुन तिवारी पत्रकारिता को गीता में प्रयुक्त 'शुभदृष्टि' शब्द के साथ पत्रकारिता को जोड़ते हैं। ज्ञातव्य है कि महाभारत में संजय द्वारा युद्ध की पल–प्रतिपल की स्थिति से घृतराष्ट के अवगत कराने के अतिरिक्त गुणों को परखने और मंगलकारी तथ्यों को प्रकाश में लाने का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। डॉ. तिवारी इन संदभों को उस युग में पत्रकारिता के अस्तित्त्व में होने की बात करते हैं।

इसी तरह इंद्र विद्यावाचस्पति पत्रकारिता को पांचवों वेद बताते हुए उसे ज्ञान–विज्ञान को प्रकाश में लाकर बन्द मस्तिष्क को खोलने वाली विद्या मानते हैं। वह अपने कथन से यह सिद्ध करते हुए लगते हैं कि पत्रकारिता का सर्वोपरि ध्येय मानव मात्र का मंगल है। इस तरह की मान्यताएं पत्रकारिता को साहित्य के बराबर स्थापित करती है। समय और समाज के संदर्भ में पत्रकारिता नागरिकों और शासन को उनके दायित्वों का बोध कराने और मंगलकारी तथ्यों को प्रकाश में लाने वाली विद्या के रूप में एक वरदान हो सकती है। यह पत्रकारिता का आदर्श है

लेकिन इस तथ्य को कैसे भुलाया जा सकता है कि पत्रकारिता एक व्यवसाय है। पत्रकारिता के जन्म से लेकर अब तक की विकास यात्रा एक व्यावसायिक विधा की तरह है। इस दृष्टि से पत्रकारिता रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर की धारणा अधिक प्रासंगिक है। वह कहते हैं, "पत्रकारिता ज्ञान और विचार को शब्दों एवं चित्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाने की पत्रकला है।" इस अवधारणा में श्पत्रकलाश शब्द को विशेष महत्त्व दिया गया है। पत्रकला अर्थात् पत्र लेखन की निपुणता जिससे पत्र लेखक पत्र के पाठकों को अपनी बात को आसानी से अवगत करा सके परन्तु यह टिप्पणी भी पत्रकारिता के पूर्णार्थ को स्पष्ट नहीं करती।

साहित्य और पत्रकारिता

भारत ही नहीं दुनिया भर के विद्वानों में यह प्रश्न लम्बे अरसे से चर्चा का विषय रहा है कि पत्रकारिता को साहित्य माना जाए या नहीं। आरंभ में पत्रकारिता का जब इतना व्यापक रूप नहीं था, नवीनतम सूचनाओं का संप्रेषण और सामाजिक घटनाओं और गतिविधियों का विश्लेषण पत्रकारिता के मुख्य अंग थे तो विद्वानों को पत्रकारिता को साहित्य मानने में कोई परहेज नहीं था। लेकिन जैसे–जैसे पत्रकारिता का विकास हुआ और नित नए विषय उसमें समाहित होते गए और विषय प्रतिपादन की कलाओं का विकास हुआ तो इस चर्चा ने और गंभीर रूप ले लिया। पत्रकारिता व्यवसाय से जुड़े विद्वानों ने इस विवाद से बचने के लिए पत्रकारिता के विभिन्न रूपों से खेल पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता आदि के समान ही साहित्यिक पत्रकारिता के नाम से उसके एक नए रूप से प्रस्तुत किया। इसके विपरीत आरंभ से ही साहित्य और पत्रकारिता दोनों को शाश्वत की साधना माना है। इस मान्यता के साथ यह अंतर भी स्पष्ट किया गया कि पत्रकारिता में परिवर्तनशील समाज का दर्शन खुला है जबकि साहित्य में एक झीना परदा है। यही कारण है कि पत्रकारिता के प्रति साहित्यकारों का आरम्भ से आर्कषण रहा।

यह आकर्षण भारत की तुलना में पश्चिमी देशों में अधिक देखा जा सकता है। भारत में जहां साहित्यकारों द्वारा पत्रकारिता को तुलनात्मक रूप साहित्य से कमतर आंकने की परंपरा रही है, संभवतः इसका कारण पत्रकारिता का साहित्य के समान ही एक स्वतंत्र विधा होना रही है और व्यावसायिक रूप में भी पत्रकारिता किसी भी अन्य बौद्धिक व्यवसाय से कम महत्त्वपूर्ण नहीं रही हैं। पश्चिमी देशों में साहित्यकारों के पत्रकारिता के प्रति आकर्षण को प्रसिद्ध साहित्यकार एडीसन के निम्न कथन से समझा जा सकता है। मेरे पत्रकार होने की चिर इच्छा पूर्ण होने से रह गई है। पत्रकार कला से अधिक मोहक और अधिक सर्वती कोई दूसरी बात तक पहुंचना उनका मनोरंजन करना उन्हें सलाह देना और जरूरत दिखाई नहीं देती। प्रतिदिन एक स्थान पर बैठकर हजारों–रियों बड़ने पर उनकी खिचाई कर देना, कैसा लगता होगा यह सोचकर भी स्पंदित हो उठता है।

इस तरह का आकर्षण भारत में देखने को नहीं मिलता। इसका एक कारण भारतीय विद्वानों की दृष्टि में साहित्य और पत्रकारिता को एक ही विना के रो रूप मानना हो सकता है, तो दूसरा कारण दोनों को शाश्वत की साधना मानना किसी–न–किसी रूप में प्रेरणा लेता है, वह चाहे साहित्यकार हो पा हो सकता है। जैसाकि खालकृष्ण राव ने कहा है, "सम–सामयिक परिवेश से पत्रकार। दोनों ही लेखक हैं, सर्जक हैं और दोनों के कार्य ऐसे गुणों की अपेक्षा करते हैं जो व्यापक सामाजिक दृष्टि, चिंतन एवं संप्रेषणीयता के प्रति अपरिहार्य है। प्रत्येक साहित्यकार अंशतः पत्रकार है और प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार है।"

पत्रकारिता और साहित्य का यह अंतर्संबंध जो पश्चिमी देशों की अपेक्षा भारत में अधिक स्पष्ट एवं गहन है, यद्यपि दोनों के स्वरूप एक हैं परन्तु व्यावहारिक स्तर पर दोनों की स्थिति अलग है। यद्यपि दोनों का ध्येय सत्यम, शिवम, सुन्दरम की साधना है। दोनों यथार्थ को उदघाटित कर आदर्श को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं परन्तु दोनों में चरित्र गत अन्तर उन्हें एक दूसरे से अलग करते हैं। जैसे एक साहित्यकार किसी घटना का व्यापक अवलोकन कर उसकी विवेचना करता है तो वह स्वयं उसकी पृष्ठभूमि तैयार करता है और एक आदर्श की कल्पना कर पाठक को प्रभावित करने की कोशिश करता है। उसमें वह अपनी अंतर्निहित दृष्टि से घटना के गूढ़ कारणों को उजागर करता है। इसके विपरीत उसी घटना का एक पत्रकार अवलोकन करता है तो वह वस्तु स्थिति के यथार्थ को उजागर कर देता है। वह उसकी विवेचना साहित्यकार के समान गहराई में उतर कर नहीं पाता और न ही उसके आदर्श की कल्पना करता है। असल में व्यवसाय गत बाध्यताएं और समय सीमा उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं देती। संक्षेप में कहा जाए तो दोनों एक सूक्ष्मदृष्टा बनकर घटना का अवलोकन करते हैं परन्तु पत्रकार का ध्येय यथार्थ को सामने लाना होता है तो साहित्यकार का ध्येय एक आदर्श को प्रस्तुत करता है।

पत्रकारिता के विविध प्रकार

जीवन की विविधता और नए–नए साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं। क्योंकि वर्तमान समय पूर्णतया विशिष्टीकरण की ओर अग्रसर है।

आधुनिक पत्रकारिता का क्षेत्र बड़ा विस्तृत और व्यापक है जिससे इसको हम बहुआयामी विधा की संज्ञा भी प्रदान कर सकते हैं। भावी पत्रकारों और इस क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रशिक्षार्थियों के लिए आज यह चयन करने की अत्यधिक सुविधा है कि वे अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुसार विषय का चुनाव कर सकें। जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में अग्रणी होता है वह उसी तरफ अपना कदम बढ़ाकर आम जनता को भी उसी ओर खींचने की कोशिश करता है, जिससे वह अपने क्षेत्र में अपनी धाक जमा सकें। समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका का नाम ही पत्रकारिता है, जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना एक स्थान तो बना ही लेती है, साथ–ही–साथ उसका निर्माण भी करती है।

जिसमें ग्रामीण पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, व्याख्यात्मक पत्रकारिता, विकास पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, संसदीय पत्रकारिता, सर्वोदय पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, रेडियो पत्रकारिता, टेलीविजन पत्रकारिता, फोटो एवं वीडियो पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता, धार्मिक एवं दार्शनिक पत्रकारिता, उद्योग पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता, कार्टून पत्रकारिता, ब्रेल पत्रकारिता, खोजी पत्रकारिता आदि अन्य है।

पत्रकारिता और साहित्य

पत्रकारिता और साहित्य–यद्यपि पृथक–पृथक विभाग हैं परन्तु इनके बीच निकट का सम्बन्ध भी है। 'साहित्य' शब्द में जिस प्रकार हित का भाव निहित है उसी प्रकार पत्रकारिता में भी लोकहित रहता है। साहित्यकार समाज में जो कुछ देखता है तथा अनुभव करता है, उसे अपनी रचना में व्यक्त कर देता है जबकि पत्रकार भी समाज के अनुभवों को अपने समाचार पत्र में व्यक्त करता है लेकिन समाचार के रूप में। इन अनुभवों को व्यक्त करने में साहित्यकार को वर्षों भी लग सकते हैं परन्तु पत्रकार को तो उसे तत्काल व्यक्त करना होता है अन्यथा उसका समाचार बासी या हैड हो जाता है और उसके अगले दिन उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता। पत्रकारिता को साहित्य के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है, हालाँकि दोनों विभाग अलग–अलग हैं। कुछ

लोग साहित्य और पत्रकारिता को एक–दूसरे का पूरक मानते हैं तो कुछ इनकी पृथकता पर बल देते हैं।

पत्रकारिता तथा साहित्य का पुराना सम्बन्ध है। पत्रकारिता को साहित्य की प्रथम सीढ़ी माना गया है। प्रारम्भ के पत्रों को साहित्यकार ही चलाते थे। इस तथ्य को बहुत से विद्वानों ने स्वीकार किया है। मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार "पत्रकारिता को शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य कहा गया है। "श्री बालकृष्ण राव ने स्वीकार किया है कि प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार भी है और प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्रकार भी।"

प्रारम्भ में साहित्यकार अपनी फुटकर रचनाएँ पत्रों में प्रकाशित करवाता है और आलोचना–समालोचना से उसका मनोबल बढ़ता है तथा वाद में यह साहित्य सृजन में रम जाता है। श्री हेरम्ब मिश्र के अनुसार, "सर्वोत्तम पत्रकारिता साहित्य है और सर्वोत्तम साहित्य पत्रकारिता है।" एच डवल्यू, मर्तिधम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बर्नार्ड शॉ ने कहा कि "कुशल पत्रकार साहित्यकार से भिन्न नहीं है। अगर साहित्यकार का काम सरकार को ठीक–ठीक देखना व परखना है तो पत्रकार का काम यही है। समाज के विचारों और साहित्य की सम्याहिका का नाम ही पत्रकारिता है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना एक स्थान तो बना ही लेती है और उसका निर्माण भी करती है। ग्रन्थों में निहित साहित्य से जो सम्भव नहीं होता, वह पत्र–पत्रिकाओं के साहित्य कर दिखाते हैं।

समाचार पत्रों में प्रायः हर रोज और मुख्य रूप से साप्ताहिक संस्करण हैं। इसके अतिरिक्त जो साप्ताहिक और पाक्षिक पत्र और पत्रिकाएँ हैं उनसे होता है जो विशुद्ध रूप से उन लोगों के द्वारा लिखा जाता है जो साहित्यकार भी साहित्यकार का लेखन जुड़ा होता है। यह देखकर किसी को आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि जो कुछ महीने पहले समाचार पत्र में नियमित रूप से पढ़ा था आज वही उसके सामने पुस्तक के रूप में पेश है। आखिर साहित्य की घटना को शब्द रूप से डालने जैसा एक कार्य है। यही कारण है कि अच्छे समाचारषत्र और पत्रिकाएँ साहित्यकार को अपने आपले जोड़े रखती हैं। यह बात सही है कि आज हमारे समाज में बहुत से साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने लेखन का श्रीगणेश समाचार पत्र और पत्रिकाओं से शुरू किया और उनकी बदौलत उन्हें समाज में व्यापक स्तर पर जाना गया और आज वे ही पत्रकार प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं।

अधिकांश रचनाकारों की प्रारम्भिक रचना समाचार पृष्ठों के पन्नों पर ही प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी की श्हरिश्चन्द्र चन्द्रिकाश, 'सरस्वती', 'हंस', 'माधुरी', 'चाँद', 'सुधा', 'मतवाला' जैसी पत्र–पत्रिकाएँ और "आज' से लेकर आज के श्नई दुनिया', 'नवभारत टाइम्स' जैसे पत्रों ने सदा ही साहित्य में प्रमुख स्थान पाया है। इन्हीं पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से कितने अज्ञात लेखक पाठकों को ज्ञात हो सके हैं। एक दृष्टि से पत्रकारिता माध्यम है जो साहित्यकार की रचना को अनेक लोगों तक आसानी से और तत्काल पहुँचा देता है। लेख, कहानी, रिपोर्ताज, संस्मरण, इंटरव्यू, रेखाचित्र इत्यादि एक ओर साहित्य के साथ भी जुड़ते हैं और दूसरी ओर पत्रकारिता के साथ भी जुड़ते हैं। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यकारों में पत्रकार का एक रूप रहता है और श्रेष्ठ पत्रकारों वे साहित्यकार का एक रूप होता है बालकृष्ण राव का मत है कि समसामयिक परिवेश से किसी–न–किसी रूप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकार। दोनों ही लेखक हैं दोनों ही सर्जनकार हैं। यथा अनाविल दृष्टि, चिन्तन, लेखन में प्रेषणीयाता की शक्ति, दोनों देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्परा के अतिरिक्त उस तश्लिष्ट सांस्कृतिक परम्परा, उस सामाजिक चेतना प्रवाह से भी सम्बन्ध हैं जिससे उन्हें अपनी बात औरों के प्रति निवेदित करने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है।

आजकल मीडिया पर सूचना प्रौद्योगिकी का वर्चस्व है। समाचार संकलन हेतु मोबाइल फोन से लेकर लैपटॉप का प्रयोग हो रहा है। समाचारपत्र का कार्यालय कम्प्यूटर पर आधारित है। संवाददाता, ब्यूरोचीफ समाचार सम्पादक अपने–अपने टर्मिनल (पीसी) पर लगे कम्प्यूटर पर समाचार को भाषायी, तकनीकी तथा संस्थान की नौति के आधार पर अन्तिम रूप देते हैं। सम्पादकीय विभाग, प्रोसेस यूनिट विज्ञापन के बीच तालमेल बैठाने एवं फोटोग्राफी के सन्दर्भ में आईटी की प्रभावकारी भूमिका है।

प्रिंट मीडिया के साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी आईटी से उपकृत है। समाचार–संकलम से लेकर समाचार–प्रसारण तक के विविध सोपानों की सफलता नाईटी पर ही आश्रित है। न्यूज वेबसाइट और पोर्टल आईटी पर निर्भर है। वर्तमान मीडिया की पूरी कार्यप्रणाली में आईटी की भूमिका मानव शरीर में रोड़ की हड्डी जैसी है। संचार–जगत् में पल–पल पर क्रान्ति देखी जा रही है। कम्प्यूटर, इन्टरनेट, ई–मेल, मल्टीमीडिया धीरे–धीरे श्रीहत हो रहे हैं। ई–मेल को पहले ही इन्स्टेंट मेसेज सर्विस से कड़ी चुनौती मिल रही है। अब मोबाइल फोन भी मुकाबले के लिए खड़ा है। मोबाइल फोन प्रयोग करने वालों में अभी भी शॉर्ट मेसेज सर्विस (एस० एम० एस०) लोकप्रिय है। इसमें छोटे लिखित सन्देश दूसरे मोबाइल पर तुरन्त भेजे जा सकते हैं। शीघ्र ही मल्टीमीडिया मोबाइल मेसेज (एस० एम० एस०) की प्रस्तुति होने वाली है जिसके द्वारा चित्र, वीडियो, कार्टून के साथ संवाद संचारित किए जा सकेंगे।

ग्रामीण अंचलों को लेकर ग्रामीण–पत्रकारिता का भी काफी विकास हुआ है। अब गाँव उपेक्षित नहीं रह गए हैं, यद्यपि इस क्षेत्र में अब भी काफी संभावनाएँ हैं। वैसे तो गाँवों के समाचार आदि सभी अखबारों में छपते हैं। कृषि संबंधी पत्रों की चर्चा अलग से की गई है। कुछ उल्लेखनीय पत्र हैं– कुरुक्षेत्र, सेवाग्राम, गाँव, ग्रामभूमि, साक्षी, ग्रामीण दुनिया (एम. एम. गुप्त, रति अग्रवाल), ग्रामीण जनता (रुड़की, नरेंद्र गोयल), स्वराज्य संदेश, ग्राम–संसार, चौपाल, गाँव की बात आदि। ग्रामीण पत्रकार संघ, ग्रामीण समाचार पत्र संघ आदि गतित हो चुके हैं, जो ग्रामीण–पत्रकारिता को आगे बढ़ाने में सक्रिय हैं।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा– इन्द्र चंद्र रजवार पृष्ठ संख्या– 15, 19, 21, 62ए 63
2. पत्रकारिता और साहित्य– डॉ. शान्ति विश्वनाथन पृष्ठ संख्या– 19, 49, 50
3. आधुनिक पत्रकारिता– डॉ. अर्जुन तिवारी पृष्ठ संख्या– 243
4. हिन्दी–पत्रकारिता की विकास– यात्रा– विष्णु पंकज पृष्ठ संख्या– 88